

---

Shri Shantadurga Devi Pranati Stotram

श्रीशान्तादुर्गादेविप्रणतिस्तोत्रम्

Document Information

---

Text title : Shantadurga Devi Pranati Stotram

File name : shAntAdurgAdevipraNatistotram.itx

Category : devii, devI, durgA

Location : doc\_devii

Proofread by : NA

Latest update : December 13, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 3, 2021

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीशान्तादुर्गादेविप्रणतिस्तोत्रम्



श्रीशान्तादुर्गा महामाये कैवल्यपुरवासिने ।  
नमो भर्गेमहाकाली महिषासुरमर्दिने ॥ १ ॥  
नमो गौरी जगन्माते रत्नमालाविभूषिते ।  
नमो भवानि रुद्राणि विश्वरूपे सुकंधरे ॥ २ ॥  
नमस्ते भगवान्माये जगद्रक्षणकारिणे ।  
नमोऽस्तु पतितोद्धारे नानारूपधरे नमः ॥ ३ ॥  
नमो दाक्षायणी देवी भक्तारिष्टनिवारके ।  
नमस्ते गिरिजे हेमी शिवरूपे महेश्वरी ॥ ४ ॥  
नमः कात्यायनी आर्ये अपर्णे सस्मितानने ।  
नमः खड्गधरे माये दशाष्टकरधारिणे ॥ ५ ॥  
षड्गुणैश्वर्यसम्पन्ने नमः सुन्दररूपिणे ।  
नवयौवनसंयुक्ते शाम्भवी शङ्करप्रिये ॥ ६ ॥  
गणनाथाम्बिके भर्गे कार्तविर्योद्भवे शिवे ।  
कामारिडिश-अर्धांगे भवरोगादिनाशिने ॥ ७ ॥  
नमः कौमार्यसम्पन्ने नीलकण्ठप्रिये नमः ।  
निशाचरकुलध्वंसे भक्तकल्पलते नमः ॥ ८ ॥  
अर्कपुष्पप्रिये चण्डि ललितादेविरूपिणे ।  
सहस्रशिरसे गौरी मोहिनी सुरपालके ॥ ९ ॥  
अहिसाप्रियसंशुद्धे हिंसाकर्मनिवारके ।  
वेदरूपिणी शास्त्राङ्गे शाक्तपाखाण्डदण्डके ॥ १० ॥  
चद्रानने चारुगात्रे सिंहासनसुशोभिते ।  
भद्रकाली विरूपाक्षे पातालपुरवासिने ॥ ११ ॥

नमो दिव्ये महादेवी वाग्वरदे विलासिनी ।  
विश्वात्मके विश्ववन्द्ये नानाभरणभूषिते ॥ १२ ॥  
जगदम्ब जगदम्ब गौडकुलप्रपालके ।  
सारस्वतेऽस्मि त्वत्पुत्र नमामि पदपकञ्जे ॥ १३ ॥  
क्षमस्व अपराधोऽस्मि हीनदीनोऽस्मि अम्बिके ।  
महामूढ महापापी महदज्ञानि पामर ॥ १४ ॥  
अतिक्रोधि सुदुष्टोऽस्मि महाचाण्डाल पातकी ।  
अघोररूपी कामोऽस्मि क्षमस्व जगदम्बिके ॥ १५ ॥  
श्रीशान्तादुर्गाचरणार्पणमस्तु ।  
इति श्रीशान्तादुर्गादेविप्रणतिस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

——  
*Shri Shantadurga Devi Pranati Stotram*  
pdf was typeset on October 3, 2021  
——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

